मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 3, अंक 60, मई(प्रथम), 2019

मालती

मीनाक्षी कर्ण

खट- खट की आवाज से मेरी नींद खुली, मैं आंख मलते हुए घड़ी पर नजर डाली तो सुबह के पांच बज रहे थे, मुझे आश्चर्य हुआ कि इतने सुबह -सुबह कौन हो सकता है? और मैं आँख मलते हुए ही गेट खोलने चली गयी। वहाँ मालती को खड़े देख चौंक गयी। आश्चर्य से पूछा- `तुम अभी !इस समय, क्या बात है? इतनी सुबह-सुबह काम के लिए क्यों चली आई? वह भी आज रविवार को, सभी सोए हुए हैं, मैं बोलती चली जा रही थी, तभी वह बोली- `दीदी गेट तो खोलिए अंदर आ कर बताती हूं'। मैंने गेट खोलकर उसे अंदर आने के लिए बोला ।

वह कुछ उदास और थकी थकी सी लग रही थी, उसके साथ साथ मैं भी किचन में चली गई और गैस पर अपने लिए और मालती के लिए चाय चढ़ा दी, तभी मालती आंखों में आंसू लिए बोलना शुरू की -`दीदी कल रात में मेरा दामाद ने मुझ को घर से निकाल दिया। मैं अपनी गोतनी (जेठानी)के घर रात भर रही।'

'क्या हुआ? जो दामाद ने तुम्हें घर से निकाल दिया' -मैंने पूछा।

मेरे साथ कुछ नहीं हुआ। बेटी दामाद का कल रात में किसी बात को लेकर झगड़ा हुआ। मैं तो सोई हुई थी। इन दोनों के झगड़े की आवाज से नींद खुली तो देखा कि दोनों झगड़ रहे हैं किसी बात पर। मैं इतना ही बोली कि -`इतने रात को दोनों क्यों झगड़ रहे हो' बस! दामाद लगा बेटी को पीटने। अब बताइए दीदी मैं क्या अपनी बेटी को पिटते देख सकती थी। मैं भी दो मुक्का दामाद को लगा दी। बस इसी गुस्से से उसने मां-बेटी दोनों को घर से निकाल दिया। आधी रात को बेटी को तो अंदर बुला लिया पर मुझे आने नहीं दिया। मैं रात भर अपनी गोतनी के यहां रही सुबह होते ही यहां चली आई ।

'मैंने तुम्हें कितनी बार बोला है कि `यदि तुम्हारा दामाद तुम्हें नहीं रखना चाहता है, तो तुम मेरे यहां रहो सिर्फ रात में सोने की ही तो बात है, दिन भर तो तुम काम ही करती हो'।
कितनी बार बोलती हूँ कि-` जितना पैसा तुम्हें मिलता है सब पैसा बेटी दामाद के हाथ में मत दो। कुछ तो अपने पास रखो या मुझे ही दे दिया करो। मैं तुम्हारे पैसे को जमा करके रख दूंगी। पर तुम तो मानती ही नहीं। जितना पैसा मिलता है सब जा कर दे देती हो। उसके

बाद पूरा महीना एक- एक रुपए के लिए बेटी दामाद का मुंह ताकती हो।एक रूपए की दवाई के लिए भी मुझसे तुम पैसा लेती हो। मैं गुस्से और तकलीफ से उसे बोलते जा रही थी और वह रोये जा रही थी। जब उसके आंसू थमे तो वह बोली -`क्या करें दीदी एक ही बेटी है ना, इसको छोड़कर नहीं रह सकती, आज यदि मेरा पति और बेटा होता तो मै क्या बेटी के घर पर रहती?´

बोलते बोलते मालती अतीत की स्मृतियों में खो गई। सुबह के समय घर के सभी लोग सो रहे थे, इसलिए मैं भी इत्मीनान से उसकी सारी बातें सुन रही थी। मैं चाय का प्याला उसे थमाते हुए बोली-` क्या हुआ? मालती तुम कुछ बोल रही थी। 'हां, दीदी, जब मेरी शादी हुई थी तो मैं बारह -तेरह साल की रही होऊंगी। पति बहुत शराब पीता था और मारता पीटता था। पति इतना मारता था कि मैं बेहोश तक हो जाती थी। लेकिन मेरे सास-ससुर एक गिलास पानी भी नहीं देते थे। रोज-रोज की मार खाना मेरी आदत बन गयी थी। कभी किसी बात के लिए तो कभी किसी बात के लिए। छोटी -छोटी बातों पर गाली -गलौज, मार - पीट करना उसकी आदत थी। कभी मेरे सास ससुर नही बोलते थे कि-` इतनी छोटी है मत मारो´, बल्कि वो लोग बेटे का ही साथ देते थे। एक बार तो इतनी हद हो गई दीदी कि क्या बताऊँ आपको !', यह कह कर सिसक- सिसक कर रोने लगी।

'क्या हुआ मालती? आज तुम अपने सारे दर्द को बोल ही दो।´

और वह कहने लगी -`एक बार मेरा पति दिन में शराब पीकर घर आया और बिस्तर पर चलने के लिए बोलने लगा। मेरी गलती सिर्फ इतनी थी कि मैंने ना बोल दिया। जिसके कारण उसने गुस्से से चूल्हे पर उबलते हुए चावल को मेरे सिर के ऊपर डाल दिया। मै पूरी तरह से जल गयी। उसके बाद मुझे हॉस्पिटल ले जाया गया। वहाँ मै एक महीने तक भर्ती रही। पुलिस आई थी हॉस्पिटल पूछने के लिए कि कैसे जली। लेकिन मै क्या करती। झूठ बोल दिया कि अपनी गलती से मैं जल गयी। मैं ठीक होकर तो आ गयी दीदी। पर आज भी मेरे सिर में झिनझिनाहट होती है।' अपनी पीठ पर से साड़ी हटाते हुए जले का निशान दिखाने लगी। उसके जले का निशान देख कर मैं विचलित हो गई। मैं आश्चर्य से उससे बोली -` मालती तुमने इतना दर्द सहकर भी उस पति को क्यों नही  छोड़ा? क्यों नहीं पुलिस को सही-सही जानकारी दी? वह बोली -`दीदी उसको छोड़कर मैं कहां जाती। मां बाप तो मुझे जिंदगी भर रखते नहीं, मैं क्या करती? अच्छा हुआ दीदी मेरा पति मर गया, यदि वह आज जिंदा रहता तो मुझको और भी तकलीफ देता।'

मैं चाय पीते पीते इस सोच में पड़ गई की कोई औरत इस हद तक अत्याचार सह कर भी पति को बचा सकती है। मैंने मन ही मन जवाब भी ढूंढ़ लिया। क्या करती बेचारी। ह्रदय से तो नही पर अपने और बच्चो के जीवन के लिए ये सब अत्याचार सहना पड़ा। तभी मालती

की सिसकियो से मेरी तन्द्रा भंग हुई और डरते- डरते, जिससे उसके दिल को और ज्यादा ठेस ना लगे, मैंने पूछा -`मालती तुम्हारे पति और बेटे की मौत कैसे हुई´?

मालती बोली- `दीदी मेरे बेटे को एक कुत्ते ने काट लिया था और मैं उसे झाड़-फूंक कराने ले गई थी, जिसके कारण देर हो गई। उसके बाद हॉस्पिटल भी ले गई। वहां उसे इंजेक्शन भी लगा। थोड़ा ठीक हो जाने पर डॉक्टर घर ले जाने के लिए कहा और बताया कि इसके साथ कोई भी नहीं खाएगा। पर एक दिन मेरा पति ने उसकी जूठन को खा लिया। एक सप्ताह के अंदर ही पहले बेटे की फिर बाप की मौत हो गई। मैं इतने सदमे में चली गई कि मुझे एक डेढ़ साल होश ही नहीं रहा कि मैं कहां हूं, कौन हूं? पागल हो गई थी मैं -अपने बेटे की मौत से।मेरी बहनों ने मेरा और मेरी बेटी की देखभाल की। बहुत दिनों के बाद मैंने अपनी बेटी को पहचानना शुरू किया। फिर धीरे-धीरे मैं ठीक हो गई। मुझे पति के मरने का कोई दुख नहीं हुआ। पर बेटे की मौत के बाद मैं भी मर गई दीदी। आज तो मै बस जिन्दा लाश की तरह हूँ।' कहते-कहते मालती के आंखों से आंसुओं की धार बहने लगी। मेरी आंखों से भी आंसू बहने लगे। मैं उसको सांत्वना देने लगी, -
`क्या करोगी मालती यह सब तुम्हारे बस की बात नहीं थी। मृत्यु को कोई नहीं रोक सकता है।´
मालती सिसकते हुए ही बोली दीदी -`आज मेरा बेटा मेरे दामाद की उम्र का होता तो क्या वह इस तरह से मुझे घर से निकाल देता? एक विधवा को इस तरह से भटकने के लिए छोड़ देता।'
मैं बोली -`मालती तुम्हारी बेटी क्यों नहीं कुछ बोलती अपने पति को?' वह बोली-` दीदी मेरी बेटी कुछ बोलती है तो उसको भी घर से बाहर निकलने की धमकी देता है। यदि वह मेरी बेटी को घर से निकाल देगा तो फिर वह कहां जायेगी? उसका तो कोई मां घर भी नहीं है।इसलिए उसको कुछ भी बोलने से मना कर देती हूँ।

मैं बोली-` मालती अब तुम क्या करोगी?'

'कुछ नहीं करूंगी दीदी! अब मैं कहीं भी रह लूँगी लेकिन बेटी दामाद के घर नही जाउंगी। जब मेरी इच्छा होगी तो बच्चो से, बेटी से मिल लूँगी। उसकी हर संभव सहायता करुँगी। पर अब मैं वहा नही जाउंगी´।

मैं उसके इस स्वाभिमान को एक टक से देखती रह गई ।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें